Global Journal of Multidisciplinary Studies
Volume 9, Issue 3, February 2020
ISSN:- 2348-0459
Available online at www.gjms.edwin.co.in

गुरू घासीदासोत्तर पंथी लोक गीतों का अनुशीलन

डॉ. श्रीमती गायत्री साहू
दुर्ग छत्तीसगढ़

सारांश

गुरू घासीदास द्वारा परिवर्तित पंथी–गीत ही मूल और प्राचीन लोकगीत हैं। यद्यपि गुरू घासीदासजी को कवि के रूप में न ख्याति ही मिली, और नहीं उनकी रचनाओं का ही प्रमाण है, तथापि उनके उपदेशों को मौखिक परम्परा में सुनकर व वाचिक परंपरा में कायम रखकर सतनामी सम्प्रदाय के लोगों ने पंथी गीत को सुरक्षित रखा । गुरू घासीदास जी के समय से प्रचलित यह पंथी गीत ही विच्छिन्न सतनामियों को एकता के सूत्र में बांधने तथा सात्विकता के संचरण में सहायक सिद्ध हुए हैं।गुरू घासीदास के मूल पंथी गीतों मेंसतनाम पंथ के सिद्धांत, निर्गुण ब्रहम की प्रतिष्ठा, भक्ति रस का परिपूर्ण प्रमुख रूप से मिलता है। ये सब शात रस के निःसृत द्वारा मंगल–गान के रूप में प्रकृत मूल लोकगीत हैं। इसके बाद अनेक ऐसे गुरू हुए जो इनके वंश–परम्परा को अग्रसित करने तथा सतनाम पंथ को उजागर करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण प्रमाणित हुए हैं। गुरू घासीदास के संक्षिप्त व्यक्तित्व–विवेचन के साथ उनका भी क्रमशः परिचय आगे दिया जा रहाहै। इन सबके योगदान सेपंथी–लोकगीतों में विविधता परिलक्षित हुई तथा युग–सापेक्ष पंथी गीत बहुरंगी छटाके साथ व्यवद्धत हुई ।

प्रस्तावना– गुरू घासीदास के बाद की पीढ़ी में गुरू घासीदास के व्यक्तित्व और महान कृतित्वको पंथी–गीतों में पिरो दिया है। यही कारण है कि पंथी–गीत ही के प्रमाण हैं,जिस आधार पर अंत साक्ष्य के निष्कर्ष पर गुरू घासीदास के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश पड़ता है। यदि पंथी गीत न होते तो गुरू घासीदास का गुमनामी चरित्र केवल कल्पना के रंग में पता नहीं किस के ठिकाने लगता। गुरू घासीदास के सतनाम पंथ में निगण निराकर के प्रतिनिष्ठा है लेकिन बाद के पंथी–गीतों में कबीर पंथ के प्रभाव और सतनाम पंथियों के समन्वय के कारण है कि कबीर के चौका गीतों का प्रभाव एक ओर जहाँ इनमें देखा गया, वहीं दूसरी ओर सगुण के प्रति आसक्ति भी प्रतिफलित हुई। शांत रस से आप्लावित पंथी–लोकगीतों में लकिक प्रेम बिरहजन्य अनुभूति के साथ करूण व अन्य रसों का भी उद्रेक उद्भूत हुआ। पंथी गीतों के भाव में बदलाव के साथ नृत्य–शैली में परिवर्तन, द्रुतगति से नर्तन, पिरामिड आदि का प्रदर्शन महिलाओं का समन्वय परिधान का आकषण, मेकअप का प्रचलन बढ़ा। आज पंथी गीत–नृत्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर प्रतिष्ठित हैं अब पूरा देश और अधिकांश विश्व की पंथी गीत–नृत्य से परिचित हैं। ऐसी स्थिति में आज पंथी लोक गीत गायक व लोक नर्तक अन्य राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय लोक कलाकारों व मंचन के प्रदर्शन की भव्यता से चमत्कत होकर, गीत संगीत व नृत्य में परिवर्तन करने में तुल गया है। प्रदर्शन की दृष्टि से अब पंथी गीत के भाव व प्रस्तुति करण की शैली महत्वपूर्ण हो गई है। भले ही यह मूल पंथी गीतों से विकृत का सूचक है लेकिन युग की मांग और 'जैतखाम' की परिक्रमा से उखड़कर मंच के ग्लैमर तक आते ही पंथी गीत बहुत कुछ बदल गया है। यहां पर उसमें उपलब्ध अन्य तत्वों की चर्चा की जा रही है, इससे उसमें आयातित युग–सत्य का आग्रह अभिव्यक्त होगा। इससे पूर्व पृष्ठ भूमि के रूप में गुरू घासीदास और उसके बादकी **वंश**–परंपरा का परिचय समीचीन प्रतीत होता है।

अट्ठारहवी शताब्दी के मध्य छत्तीसगढ़ भारतीय इतिहास में मुख्य रंग–मंच में अवस्थित उत्तरी भारत से काफी दर वनों से आच्छदित, पहाड़ों से विभाजित, मराठों के शासन तंज से अस्त–व्यस्त जीवन व्यतीत कर रहा था, और जहां उस पर अंग्रेजों का अत्याचार भी अपनी चरम सीमा पर था, वहीं रूढ़ी ग्रस्तता, छुआ–छत परंपरा वादिता और निर्धनता के कोढ़ ने समाज को विकलांग कर रखा था। अज्ञानता की इस चरम परिणति में गुरू घासीदास का जन्म सूर्योदय के समान हुआ। छत्तीसगढ़ अंचल में रायपुर जिलांतर्गत बलादा बाजार तहसील के सोनाखान जंगल में गिरौदपुरी नामक ग्राम में अट्ठारह दिसम्बर सन सत्रह सौ छप्पन ईसवीं में गुरू घासीदासजी का जन्म माना जाता है। इनको माता का नाम अमरौतिन तथा पिता का नाम श्री महगूदास था। इनका विवाह सफुरा से हुआ जो कि कालांतर में सफुरा माता के नाम से प्रसिद्ध हुई। गुरू घासीदास जी गुरू परंपरा का निर्वाह करते हुए सन् 1820 से सन 1850 के बीच सक्रिय रहे। गुरू घासीदास के मृत्यु के पश्चात् भी सतनामी संप्रदाय वर्तमान में भी अपने गुरू परंपरा को पूरी निष्ठा से निभा रहा है। सतनामी पंथ अपने गुरू के द्वारा बनाये गये नियमों का पालन तो करते ही हैं, किन्तु समाज में व्याप्त बुराइयों से लड़ने के लिए तथा समाज को अनुशासन बद्ध तरीके से चलाने के लिए एक आंतरिक जाति व्यवस्था या सामाजिक ढांचा बनाया है, जिसके सर्वोच्च पद पर गुरू अपनी परंपरा का निर्वाह करते हुए आसीन रहते है। गुरू के बाद द्वितीय प्रमुख स्थान राजमहंत का होता ह। राजमहंत को अपनी पूजा अर्चना कराने के अतिरिक्त सामाजिक व्यवस्था व न्यायिक संबंधी बहुत से अधिकार प्राप्त हैं। राजमहंत का पद होता है, जो कि प्रत्येक तहसील का सरगणना होता है, जो सतनामी सप्रदाय के संबंधित अपने अधिकारों के अंदर कर सकने वाले निर्णय करता है, तथा अपनी तहसील समस्याओं को स्वयं हल करता है। तहसील महंत के पश्चात् आठग्रामों के महंत आते हैं, जो कि प्रत्येक आठ गाँवों के निर्धारित होता है। यह व्यवस्था सूक्ष्म एवं क्रियात्मक सामाजिक व्यवस्था की परिचायक है, क्योंकि बहुत संख्या वाले समाज की समस्याओं का निवारण किसी एक या दो व्यक्तियों के सामर्थ्य के बाहर क चीज है, अतः किसी भी समाज में एक व्यवस्थित अनुशासन क लिए ऐसी व्यवस्था जो प्रत्येक तहसील गाँव एवं परिवार तक पहुँचती हो, सतनामी सम्प्रदाय की यह जाति व्यवस्था इस बात की पुष्टि करती है। आठ गाँवों महंत के पश्चात् भंडारी का पद होता है। भंडारियों का कार्य अपने वितरित भंडार क्षेत्रों से राशि एकत्र करके उन्हें अपने गुरू तक पहुँचाने हेतु व्यवस्था करना होता है। भंडारी के पश्चात् प्रत्येक गाँव के लिए एक शांतीदार होता है, जिसका कार्य सतनामी समाज को अपने अपने गाँव के किसी विशिष्ट अवसर पर एकत्रित करना होता है। अंत में पंच का पद होता है, जो कि प्रत्येक गाँव में होते हैं, तथा काय न्यायिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाना होता है। 1. पंथी लोक गीत आने पर सर्व श्री गुरू घासीदास, अमरदास,

Global Journal of Multidisciplinary Studies
Volume 9, Issue 3, February 2020
ISSN:- 2348-0459
Available online at www.gjms.edwin.co.in

बालकदास, आगरदास, नैनदास, भुजबल महंत, आसकरण व बोधनदास की चर्चा करते हैं, जिन्होंने क्रमशः सतनाम पंथ का प्रवर्तन का प्रचार किया–

जेकर महिमा गावै साधु सत ह,
सतनाम ल लाने घासीदास ह ।
अमरदास गुरू के बड़ महिमा हे,
जेकर मेला भरथे चटुवा घाट मा।
बालकदास गुरू गद्दी पूजा कराये,
जेकर महल बने भंडार मा।
महंत नैनदास जनेव ल पहिनये,
गौ के बंद ल छुड़ावे ह।
भुजबल महंत डोला ल जीने,
वो रहत रीस भोरिंग गाँव मा।
गिरौदपुरी मेला नैनदास कुर्रे बढ़ाये,
तेलासी बाड़ा में गड़ाये जैतखाम ल।
संत महंत गुरू आसकरण दास ह।
एक सौ तीन धर्मवीर जेल गये।
गौकरण बंशी बोधनदास।

गुरू घासीदास और उनके अनुयायियों अथवा सतनामी पंथ की मौलिक परंपराएँ मध्यकालीन भारत के प्रसिद्ध समाज सुधारक रामानंद के शिष्य रैदास की ही परम्परा में सन्निहित है, गुरू घासीदास जी ने धूम्रपान का भी निषेध किया था। 2.

1. **चोगिया शाखा** – ऐसा कहा जाता है कि उनके बहुत सारे अनुयायी इस शर्त को नहीं मान सके, इसलिए उन्होंने अपनी चोंगी पीना प्रारंभ कर दिया। उन्होंने यह तर्क भी कालांतर में दिया कि गुरू घासीदास ने बाद में इस बंधन को वापस ले लिया था। इस तरह जो लोग धूम्रपान करते हैं, ऐसे सतनामियों की एक अलग शाखा बन गई है, जिसे 'चोगिया' सतनामी कहा जाता है। इस शाखा के लोग मूर्ति–पूजा भी करते हैं, विशषकर ग्राम देवी और देवता की। इन कारणों से आम सतनामियों के बीज उन्हें हेय दृष्टि से देखा जाता हैं, तथा इन्हें नीचा समझा जाता है। 'चोगिया' और अन्य सतनामियों के बीच वैवाहिक संबंध भी बहुत कम होते हैं। चोगिया सामान्य सतनामी बड़ी सरलता से बन सकते हैं। यदि वह अपने गुरू के सामने नारियल फोड़ कर धूम्रपान न करने की शपथ लेता है तो उस दिन से उसे सतनामी मान लिया जाता है वे चोंगी नहीं पीते है। 3.

2. **जहरिया शाखा** – सतनामी पंथ के अंतर्गत उसकी एक दूसरी शाखा है जिसे जहरिया या जहर कहा जाता है, जो कभी भी पलंग या खाट में नहीं सोते हैं नित्य जमीन पर सोते है और सफेद मोटा वस्त्र धारण करते हैं तथा दाल और चावल के अतिरिक्त अन्य अन्न ग्रहण नहीं करते। 4.

संदर्भ ग्रंथों की सूची –

1. गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों का सतनामी समाज के रोजगार एवं आयकर प्रभाव– डॉ. रानू द्विवेदी पष्ठ – 16–17
2. छत्तीसगढ़ में सांस्कृतिक चेतना का विकास डॉ. अशोक शुक्ल, पृष्ठ–26
3. गुरू घासीदास–संपादक डॉ. विनय कुमार पाठक, शीर्षक दलितों के मसीहा शरदचंद्र बेहार पृष्ठ–29
4. छत्तीसगढ़ में सांस्कृतिक चेतना का विकास डॉ. अशोक शुक्ल, पृष्ठ–26